VOL. 4 | ISSUE 1| JANUARY 2018 (UGC Approved Journal No. 63716) Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

ISSN: 2454-5503

# CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

(BOOK VI)

Special Issue on the Occasion of National Conference on

## Women Empowerment in India

(27 January, 2018)

Organized by

**Shikshan Maharshi Dnyandeo Mohekar Mahavidyalaya**
**Kalamb, Dist. Osmanabad**

**Dr. Namanand G. Sathe**
Editor

**Dr. Ashokrao Mohekar**
Principal

**MGEW SOCIETY'S**
**CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES**
**KALYAN (MAHARASHTRA)**

Contact: +91 9730721393 +91 8329000732 chcskalyan@gmail.com

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)
ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 3.012 (IIJIF)

# CONTENTS


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | महिलांचा राजकारणातील सहभाग | प्राचार्य व्ही.जी. गुंडरे(रेड्डी)<br>प्रा.सचिन राजाभाऊ डहाळे | 07 |
| 2. | 'महिला सबलीकरण साठी भारत सरकारचे प्रयत्न' | प्रा.आर. एन. निगडे | 09 |
| 3. | स्थानिक स्वराज्य संस्थामधील महिलांचा सहभाग | प्रा. एन.ए.पाटील | 11 |
| 4. | स्त्रीवाद : स्त्रीउध्दाराचा विचार व स्त्रीसबलीकरणाची चळवळ | डॉ. सय्यद आर.जे. | 14 |
| 5. | महिला सबलीकरण व भारत | डॉ. आर. बी. शेजूळ | 19 |
| 6. | पक्षीय राजकारणात महिलाचासहभाग | प्रा.डॉ.अघाव एन. बी. | 22 |
| 7. | स्थानिक स्वराज्य संस्थामधील महिला नेतृत्व एक चिकित्सक अभ्यास | डॉ.सुनिल चकवे | 25 |
| 8. | महिला सबलिकरण | प्रा.चावरे एम. व्ही. | 27 |
| 9. | महिला सबलीकरणाची साधने | डॉ. नामानंद गौतम साठे | 29 |
| 10. | स्त्रियांसाठी भारतीय संविधानातील तरतूदी व स्त्रिवादाचे स्वरूप | बिराजदार अंबादास | 31 |
| 11. | महिला सबलीकरण आणि भारतीय संविधान | प्रा.डॉ.बिडवे टी.एस | 34 |
| 12. | महिला सक्षमीकरण आणि राजकारण | डॉ.भुजंग पाटील | 36 |
| 13. | स्त्रीवाद : अर्थ, स्वरुप, विकास व प्रकार | डॉ. जगदीश देशमुख | 39 |
| 14. | महिला सबलीकरण संकल्पना व स्वरूप | डॉ. अनिल दत्तू देशमुख | 43 |
| 15. | Women Empowerment: Meaning, Concept … | Archana K,Chavare | 46 |
| 16. | महिला सबलीकरणासाठी भारतात व महाराष्ट्रात झालेले प्रयत्न | डॉ. विलास नारायण ठाले,<br>डॉ. दिनकर कळंबे | 48 |
| 17. | स्त्रीवाद - अर्थ, स्वरुप, विकास प्रकार | डॉ. दिनेश रा. हंगे | 51 |
| 18. | Empowerment of Women Political Participation in India | Dr. Vivek M. Diwan | 53 |
| 19. | सार्वजनिक आरोग्य विभागामार्फत महिलासांठी राबविल्या जाणाऱ्या …. | डॉ.आमले एस.एस. | 57 |
| 20. | स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि महिला सक्षमीकरण | प्रा.रासवे दिनकर सुदामराव | 60 |
| 21. | डॉ.शंकर शेष के नाटकों में चित्रित 'स्त्री' चरित्र | प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी | 62 |
| 22. | नेतृत्वाच्या माध्यमातुन महिला सक्षलिकरण | प्रा.सय्यद आर. आर. | 65 |
| 23. | Mass Media and Women | Rajesh K. Gaikwad | 67 |
| 24. | भारतीय महिला आणि आरक्षण | डॉ.राम प्र.ताटे<br>प्रा.अर्चना शिवाजी वाघमारे | 69 |
| 25. | पंचायतराज व्यवस्था आणि महिला सबलीकरण | डॉ. रमाकांत तिडके | 71 |
| 26. | महिला सबलीकरणासाठी भारतात झालेले प्रयत्न | डॉ. आर.के. काळे | 73 |
| 27. | स्त्रीवाद : अर्थ, विकास व प्रकार | क्षीरसागर दिलीपकुमार | 76 |
| 28. | तत्कालीन समाजजीवनाचे दाहक वास्तव :मुक्ता साळवे यांचा निबंध | डॉ.सुशीलप्रकाश चिमोरे | 79 |
| 29. | महिला सबलीकरण आणि सामाजिक बदल. | प्रा. आर. ई. भारूडकर | 83 |
| 30. | Woman Empowerment in Rama Mehta's *Inside the Haveli* | Dr. Milind Mane | 86 |
| 31. | Political Participation And Representation Of Women … | Dr. Mohan Chougule | 88 |
| 32. | राजकीय नेतृत्व व महिला सक्षमीकरण | प्रा. मोरे चंद्रकांत | 91 |
| 33. | Women's Empowerment And Political Participation | Shaikh G. A. | 94 |
| 34. | भारतीय राजकारणात महिलांचा सहभाग आणि भूमिका | प्रा.महादेव रावसाहेब मुंडे | 98 |
| 35. | स्त्रीवाद : अर्थ, स्वरूप व विकास | डॉ. पंडित महादेव लावंड | 102 |
| 36. | Women Empowerment in India | Dr.P.W.Patil | 106 |
| 37. | Women Empowerment — Challenges | Pradeep Ingole | 108 |
| 38. | महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा सक्रीय सहभागाचा … | डॉ.कदम एच.पी. | 110 |
| 39. | स्त्री–सषक्तीकरण' की अवधारणा का सम्यक अध्ययन … | डॉ. विनोदकुमार | 112 |
| 40. | महिला सबलीकरणात शासनाची भुमिका - एक दृष्टिक्षेप | प्रा.किरण कि. येरावार | 116 |

**Chronicle of Humanities and Cultural Studies**
**(UGC Approved Journal No. 63716)**
ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

# 39.

# 'स्त्री–सषक्तीकरण' की अवधारणा का सम्यक अध्ययन : भाषा और साहित्य के विषेष सन्दर्भ में

**प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'**
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
व्यंकटेष महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

**'स्त्री–सषक्तीकरण' की पृष्ठभूमि :–**

प्रसिद्ध स्त्री–वादी आलोचिका मनिषा के मत में – "यह कोई साधारण लेखन नहीं है, जो रोजी–रोटी या प्रसिद्धी के लिए किया जाता है। यह आन्दोलन है। मानसिक और वैचारिक आन्दोलन। मूक और बिना शोर–षराबे के चलनेवाला। इसमें तपीष ही इतनी जबरदस्त है, जिससे मर्दों के दिमाग की चूलें हिल जाती हैं।"

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में साहित्य को समझने की दृष्टि में गुणात्मक एवं संख्यात्मक परिवर्तन आया है। उपेक्षित लोग या यूँ कहें कि, हाषिए पर स्थित लोग अचानक साहित्य के केन्द्र में आने लगे। इन्हीं कारणों से 'आदिवासी विमर्ष' और 'दलित विमर्ष' के साथ–साथ 'स्त्री–विमर्ष' या 'स्त्री–सषक्तीकरण' भी साहित्य की प्रधान धारा में समाविष्ट होने लगा। सामाजिक धरातल पर 'स्त्री–सषक्तीकरण' एक ऐसा विमर्ष है, जिसने सम्पूर्ण विष्व में लगभग सभी स्तरों पर एक प्रकार से हड़कम्प मचा दिया है। 'स्त्री–सषक्तीकरण' स्त्री–मुक्ति से सम्बन्धित एक परिवर्तनवादी विचारधारा है। मूलतः 'स्त्री' समाज की धूरी के रूप में समाज का लालन–पालन–पोषण षतियों से करती आई है, अतः उसके द्वारा या उसकी मुक्ति का आन्दोलन जब व्यावहारिक रूप लेता है। समाज में ऊथल–पुथल मच जाना स्वाभाविक हो जाता है। 'स्त्री–सषक्तीकरण' स्त्री–मुक्ति के प्रयासों की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि है। यह एक ऐसा विमर्ष है जो स्त्रियों के जीवन के अनेक छूए–अनछूए वेदनामय अन्तर्बाह्य जगत के प्रकटीकरण के अवसर उपलब्ध कराता है, क्योंकि 'स्त्री–सषक्तीकरण' का ध्येय समाज और साहित्य में स्त्री की दूसरे स्तर की स्थिति–गति पर अश्रुमोचन तथा जैसे–थे स्थिति बनाए रखने में उन कारणों की खोज की है, जो स्त्री की इस स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं।

'स्त्री–सषक्तीकरण' का मूलभूत आधार है – स्त्री की पहचान, स्त्री स्वतन्त्रता या मुक्ति यानि स्त्री की पहचान को सम्बन्धों से परे एक व्यक्ति की पहचान के रूप में स्थापित करना। यह स्त्री के प्रति होने वाले षोषण के विरुद्ध ऐसा संघर्ष है, जो स्त्री को उसकी स्वयं की स्थिति के बारे में सोचने, निर्णय की दृष्टि और दावा पेश करने की ऊर्जा देती है।

आधुनिकता बोध के केन्द्र में मानव की चिन्ता का स्वर उसे स्वाभाविक ही परम्परावादियों की नजर में प्रषंसनीय बना देता है। जब मध्ययुगीन–बोध की अलौकिक चिन्ता को नज़र अन्दाज करके आधुनिकता बोध ने इहलोक को अपना चिन्तन–क्षेत्र बनाया, तो स्वयं ही उसकी समाज की न्यूनांष में विद्यमान षतियों की षोषित–पीड़ित स्त्री पर भी पड़ी। परिणामस्वरूप पितृसत्तात्मक समाज के निरंकुष अधिकार क्षेत्र में स्त्री ने भी अपनी षिकायतों, समस्याओं तथा इच्छाओं को अर्ज करवाने का हक हासिल किया, अपितु यह कहना चाहिए कि, आधुनिकता बोध ने उसे स्वयं के अधिकारों के प्रति जागरूक कराया। ठीक उसी दिन से स्त्री की चेतना का विद्रोही स्वर समाज और सहित्य में सभी स्थानों पर गुँजने लगा।

अब जब स्त्री ने विद्रोह किया ही है, तो यह सहज है कि, वह पुरातन का अस्वीकार और नूतन की खोज में बहुत कुछ छोड़ेगी भी और बहुत कुछ अपनायेगी भी। दूसरे अर्थों में स्वयं के अस्तित्व की पहचान भी दर्ज करायेगी। स्त्री के द्वारा ऐसे करने की प्रक्रिया में निष्चित रूप में अधिकांष पुरातन, रूढ़, परम्परागत और तथाकथित षाष्वत बातों का महल गिरकर मलबा बन जायेगा। वस्तुतः 18 वीं षती के अन्त में अर्थात् 1789 में फ्रान्सिसी राजकीय क्रान्ति ने पहली बार मानवाधिकारों को खुलकर सामने पेष किया। 'स्त्री–सषक्तीकरण' के

बीज भी इसी क्रान्ति में सर्वप्रथम दिखाई देते हैं। रूसो और लौक की माँग में ही एक प्रकार से पितृसत्तात्मकता राजकीयं संरचना का विरोध किया गया था।

अब स्त्रियों में जागृति होती गई, जागृति के साथ आत्मविष्वास भी आता गया। इस आत्मविष्वास को बढ़ाने में कतिपय विचारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिनमें मेरी वोल्टसन क्राफ्ट की पुस्तक 'द विण्डीकेषन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमेन' (1772) स्त्री आन्दोलन के सन्दर्भ में एम महत्वपूर्ण प्रलेख है। तत्पष्चात् प्रसिद्ध दार्षनिक जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक 'द सब्जेक्षन ऑफ वूमेन' (1851) भी एक महत्वपूर्ण प्रलेख माना जाता है। इन दोनों के साथ ही सीमोन द बोउवार की पुस्तक 'द सेकेण्ड सेक्स' (1949) की चर्चा के बिना स्त्री–मुक्ति के आन्दोलन का इतिहास ही पूरा नहीं हो सकता। इन विदुषी के अनुसार – ''औरत जन्म से ही औरत नहीं होती, बल्कि बढ़कर औंरत बनती है। कोई भी जैविक, मनोवैज्ञानिक या आर्थिक नियति आधुनिक स्त्री के भाग्य की अकेली नियन्ता नहीं होती। पूरी सभ्यता ही इस अजीबो–ग़रीब जीव का निर्माण करती है।'' इस सन्दर्भ में बेट्टी फ्राइडन ने 1960 में 'नॅषनल ऑर्गनायज़ेषन ऑफ वुमेन' की स्थापना की। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें 'द फेमिनीन मिस्टिक' (1963) और 'द सेकेण्ड स्टेज' भी इस आन्दोलन की महत्वपूर्ण प्रलेख बनी।

उपरोक्त सभी विचाराकों की आधारषिला पर सन 1970 में अमेरिका की लाखों स्त्रियों ने सड़कों पर उतरकर एक अनोखा आन्दोलन किया। इन स्त्रियों ने हाथ में 'हमें मुक्त करो' लिखी तख़्तियाँ लेकर नारे लगाए। इस आन्दोलन की सबसे बड़ी विषेषता थी, 'ब्रा बर्निंग' (चोली जलाओ)। इसमें प्रतीकात्मकता यह थी कि, स्त्रियाँ केवल सेक्स ऑब्जेक्ट (काम–वासना–पूर्ति की वस्तु) नहीं हैं। इस आन्दोलन का प्रतिरोध और प्रतिक्रिया बहुत बड़ा और तीव्र प्रभाव छोड़ गया।

**मतदानाधिकार और स्त्री–षक्ति :–**

लोकतन्त्र के आगमन के पष्चात् स्त्री के मताधिकार को लेकर भी पर्याप्त आन्दोलन हुए। न्यूज़ीलैण्ड में सन 1893 में, ऑस्ट्रेलिया में सन 1902 में, फिनलैण्ड में 1906 में, नार्वे में 1913 में, रूस में 1917 में, स्वीडन तथा अमेरिका में 1920 में और इंग्लैण्ड में 1928 में मतदान का अधिकार स्त्रियों का प्राप्त हुआ। मतदान का अधिकार मिलने पर 1970 तक 'मुक्ति दो' का नारा लगाया गया। 1980–1990 में उत्तर–आधुनिकतावाद ने जैक देरिदा के 'विखण्डन' सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में चिन्तन के क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इसके परिणामस्वरूप 'स्त्री–पाठ', 'स्त्री–भाषा', 'स्त्री–साहित्य सैद्धान्तिकी', 'दलित स्त्री', 'लेस्बियन स्त्री (समलैंगिक स्त्री)' आदि की चर्चा होते–होते 'पावर फेमिनिज़्म' के रूप में उभरकर सामने आयी।

स्त्री–सषक्तीकरण की मान्यताएँ :–

1) 'स्त्री–सषक्तीकरण' की प्रथम मान्यता है कि, पितृसत्तात्मक व्यवस्था लिंग–भेद पर आधारित है। इस व्यवस्था ने स्त्री को सौन्दर्य, पवित्रता, भलाई, कोमलता जैसे विषेषणों से महिमामण्डित किया तथा पुरुषों के सन्दर्भ में भिन्न विषेषणों का प्रयोग करते हुए पुरुष को स्त्री से श्रेष्ठ माना। लिंग–भेद के आधार पर ही सदियों से पुरुष ने स्त्री को अपनी सम्पत्ति मानकर उसे उपेक्षित और हाषिए पर रखा।

2) 'स्त्री–सषक्तीकरण' की दूसरी मान्यता है कि, सामाजिक व्यवस्था में स्त्री का स्वरूप जिन आधारों पर टिका है, वह जैविक आधार है, जो यह स्पष्ट करता है कि, स्त्री और पुरुष के षरीर की संरचना भिन्न है। स्त्री–षरीर किषोरावस्था से लेकर मेनोपौज़ तथा मासिक धर्म, गर्भधारणा जैसी अनेक प्रक्रियाओं में विभाजित है। इन प्रक्रियाओं के कारण स्त्री सदैव सतर्क, आषंकित और चिन्तित रहती है और इन्हीं कारणों से पुरुषों की भाँति स्वच्छन्द, स्वतन्त्र और मुक्त जीवन–षैली अपनाने से डरती है। उसकी इस मानसिकता के पीछे समाज ही है। स्त्री और पुरुष की अस्मिता के निर्माण में जैविक आधार की कोई भी भूमिका नहीं है।

**भारतवर्ष का स्त्री–चिन्तन :–**

भारतवर्ष में भी उपरोक्त चिन्तन का प्रभाव दिखाई दे रहा था। विषुद्ध भारतीय चिन्तन पर आधारित विचारधारा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के आर्य समाज एवं उनकी षिष्या पण्डिता रमाबाई के महिला आर्य समाज तथा पष्चिमी चिन्तन के प्रभाव स्वरूप राजा राममोहन राय, केषवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द, भगिनी निवेदिता, महात्मा फुले एवं सावित्रीबाई फुले आदि के व्यक्तिगत तथा संस्थागत प्रयास महत्वपूर्ण हैं। होमरूल आन्दोलन, 1917 से 1919 तक चले मतदान अधिकार के अन्दोलन, 1919 का असहयोग आन्दोलन, 1932 का स्वदेषी आन्दोलन, 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन आदि में स्त्रियों ने पुरुषों के कन्धों से कन्धा मिलाकर सहभाग लिया। इन आन्दोलनों में एनी बेज़ेण्ट, विजयालक्ष्मी पण्डित, कमलादेवी चटोपाध्याय, राजकुमारी अमृता कौर, हंसा

मेहता, कमला नेहरू, सुषमा सेन जैसी महिलाओं ने स्त्री–मुक्ति के लिए बड़े प्रयास किये। इन महान महिलों के प्रयासों का क्या परिणाम हुआ यह किसी से छिपा नहीं है।

स्वाधीनता के पष्चात् संविधान ने स्त्री–पुरुषों के समानाधिकार का मार्ग खुला किया। मार्क्सवाद, मनोविष्लेषणवाद और अस्तित्ववाद के प्रभावस्वरूप 'यौनषुचिता' का स्थान 'जैविक आवष्यकता' के रूप में सेक्स का प्रचार होने लगा। धीरे–धीरे 'स्त्री–मुक्ति आन्दोलन' यौन–स्वच्छन्दता और स्वैराचार का पर्याय बनता गया। इसके प्रतिरोध में अत्याचार, बलात्कार, यौन अपराध, विवाहेतर सम्बन्धों का प्रचलन, वैवाहिक सम्बन्धों की टूटन, हत्या, आत्महत्या आदि का अटूट सिलसिला जारी हुआ। यही प्रतिरोध स्त्री–सषक्तीकरण के लिए सबसे बड़े खतरे के रूप में दिखाई देता है।

प्रारम्भिक स्त्री–लेखन तथा स्त्री–सषक्तीकरण :–

स्त्री–लेखन, स्त्री–अस्मिता की स्वतन्त्र और निजी धारणा है। अस्मिता का अर्थ परिवार और समाज में अपनी पहचान विषेष बनाना है, जो कि सामाजिक सीमाओं में आबद्ध है। हिन्दी साहित्य में स्त्री–सषक्तीकरण की प्रथम अभिव्यक्ति मध्ययुगीन भक्तिकाव्य के माध्यम से हुई। प्रसिद्ध आलोचक से0 रा0 यात्री के षब्दों में – " मध्यकाल में मीराँबाई के काव्य और जीवन में फूटता हुआ लावा नारी–विमर्ष (स्त्री–सषक्तीकरण) का ही था। वह पन्द्रहवीं षती की एक ऐसी विद्रोहिणी प्रतिभा थी जिसने नारी–अस्मिता का एक अभूतपूर्व इतिहास रचा था। युगों–युगों से दबी–कुचली, भारतीय नारी का मर्यादित होकर पूरी षक्ति और खुले षब्दों में जीवित होने का अहसास दिया था। राज घराने की मर्यादा मानी जाने वाली मीराँबाई ने जब यह उद्घोष किया होगा, 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई' तो तात्कालीन रूढ़िवादी समाज में कितने ज्वालामुखी एक साथ फटे होंगे। हम सभी उन अमानवीय यातनाओं से परिचित हैं, जो असली स्वतन्त्रता की एवज में मीराँबाई ने झेलीं।"

मीराँबाई के बाद एक अज्ञात लेखिका की पुस्तक 'सीमन्तिनी उपदेष' (1882) षीर्षक पुस्तक सामने आई है। इसमें विधवा स्त्री के कटु जीवन, कठोर यातना को सहने वाली स्त्री का चित्रण किया है। विधवा नारी किस प्रकार अपनी इच्छा–आकांक्षाओं का गला घोंटकर जीवन–यापन करती है, इस तथ्य को उजागर करना ही कदाचित लेखिका का उद्देष्य रहा है। किन्तु इस काल में जो समाज सुधारणा के प्रयास किये गये उनका प्रतिबिम्ब भी इस पुस्तक में प्राप्त होता है। लेखिका लिखती है – "स्वामी दयानन्द सरस्वती जिनके उपदेष से तमाम हिन्दुस्तान में विद्या का चर्चा हो रहा है। हर जगह आर्य समाज कायम हुई है और हमको उम्मीद है कि, किसी दिन हमारे मुकदमे भी इन्साफ करेंगे। "

बीसवीं षती के पूर्वार्द्ध में सुभद्राकुमारी चौहान ने 'झाँसी की रानी' जैसी कविताओं के माध्यम से नारी मुक्ति की वाणी को प्रखर रूप दिया है। महादेवी वर्मा ने अपनी कविता के स्वर के एकदम विरुद्ध अपने वैचारिक साहित्य में विषेषकर ' (हमारी) श्रृंखला की कड़ियाँ' में पूर्ण सम्वेदना और साहस के साथ स्त्री–षोषण की विभीषिका का उद्घाटन किया है।

हिन्दी में लेखिकाओं की बाढ़ :–

इधर हिन्दी में मन्नू भण्डारी, ऊषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, ममता कालिया, मृणाल पाण्डे, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, कुसुम अंसल, नमिता सिंह, गितांजलीश्री, नासिरा षर्मा, अर्चना वर्मा, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा, उषादेवी मिश्रा, राजी सेठ, कमल कुमार, कौषल्या बैसंतरी, सुषीला टाकभोरे आदि 'स्त्री–सषक्तीकरण' को लेकर हिन्दी कथा साहित्य (कहानी और उपन्यास) के आकाष पर अवतरित हुई हैं। इन लेखिकाओं में से अधिकांष ने अपनी आत्मकथा भी लिखी है।

उपन्यास साहित्य में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ इस प्रकार से हैं – मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी', कृष्णा सोबती का उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के', 'दिलो दानिष', 'मित्रो मरजानी', ममता कालिया का 'बेघर', उषा प्रियंवदा के 'पचपन खंभे लाल दिवारें', 'रूकोगी नहीं राधिका', 'अन्तर्वषी', गितांजलीश्री का 'माई', प्रभा खेतान का 'पीली आँधी', 'छिन्नमस्ता', 'तालाबंदी', 'आओ पेपे घर चलें', 'अपने–अपने चेहरे', क्षमा षर्मा का 'परछाई अन्नपूर्णा', मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी', 'इदन्न मम', 'चाक', 'झूला नट', रूपरेखा वर्मा का 'पिछले पन्ने की औरतें', सोना चौधरी का 'पायदान', मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा', मंजुल भगत का 'अनारो', 'लेडी क्लब', मालती जोषी का 'पाषाण युग', नमिता सिंह का 'अपनी सलीबें', चित्रा मुद्गल का 'एक अपनी जमीन' आदि उपन्यास महत्वपूर्ण हैं।

उपर्युक्त सभी उपन्यासों में स्त्री की अलग–अलग भवनाओं को वाणी मिली है। किन्तु चित्रा मुद्गल का दृष्टिकोण ही इन सबसे हटकर है। अपनी औपन्यासिक रचना 'एक जमीन अपनी' में वे लिखती हैं – "औरत बोनसाई का कोई पौधा नहीं है – जब जी चाहे उसकी जड़ें काटकर उसे वापस गमलों में रोप लिया। वह बौना बनाए रखने की इस साजिष को अस्वीकार करती है। " चाहे जो हो चित्रा जी तथाकथित स्त्री–वाद का विरोध

करती हैं – "मर्दों की भाँति रहना, वे समस्त आचार व्यवहार, व्यवस्थाएँ अपनाना – यही समानता का दृष्टिकोण है ? .....जब ये व्यवस्थाएँ पुरुषों के अनैतिक, अमानवीय और निरंकुषताएँ हैं तो स्त्री के लिए कैसे उचित हो सकती हैं।" चित्रा जी पुरुषों के विरोध को अनुचित ठहराते हुए लिखती हैं – "पुरुष विरोध करते हुए उन्हीं की तरह निरंकुष और स्वच्छन्द हो जाना नारी मुक्ति नहीं है।"

कथासाहित्य में वे जो बातें स्पष्ट रूप से कह नहीं सकती थी, उन्हें अपने जीवन के उदाहरणों से आत्मकथा में अभिव्यक्त किया है। इस सन्दर्भ में मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी', चन्द्रकिरण सौनरिक्सा की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना', मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तुरी कुंडल बसै' एवं 'गुड़िया भीतर गुड़िया', प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या', रमणिका गुप्ता की 'हादसें', कौषल्या बैसन्तरी की 'दोहरा अभिषाप', सुशीला टाकभोरे की 'षिकंजे का दर्द' अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

❑❑❑

ISSN: 2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197(IIJIF)
(UGC Approved Journal No. 63716)

# CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 4 NO. 1 JAN. 2018 BOOK VI
A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

## SPECIAL ISSUE

On the Occasion of One Day National Conference On

## WOMEN EMPOWERMENT IN INDIA

27th January, 2018

*Editor*
**Dr. Namanand G. Sathe**

*Principal*
**Dr. A. D. Mohekar**

**ORGANIZED BY**
**DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE**
**DNYAN PRASARAK MANDAL'S**
**SHIKSHAN MAHARSHI DNYANDEO MOHEKAR MAHAVIDYALAYA,**
**KALAMB. DIST. OSMANABAD**

# Guidelines for Authors

No manuscript will be considered which has already been published or is being considered by another journal / book.

Papers should be typed in MS Word 2003/2007.

Paper size: A4, Font & size: Times New Roman 12, line spacing: 1, Margin of 1 inch on all sides.

The tables and figures in the text should be centralized.

References should be cited in MLA parenthetical style. (Name of the author and page numbers in the parenthesis in the text and list of the works cited arranged alphabetically at the end of the paper)

The paper must be accompanied by a brief CV of the contributor, self declaration certificate, postal address, phone/cell numbers, E-mail ID(s).

Contributors are advised to check spelling, punctuation, sentence structure, and the mechanical elements of arrangements, spacing, length, and consistency of usage in form and descriptions before submission.

Final selection for publication will be made only at the recommendation of the Peer Review Panel. The details of the selection of paper will be communicated to the contributors. The editors reserve the right to make necessary editing for the sake of conceptual clarity and formatting.

Mahatma Gandhi
Education & Welfare Society

Printed and Published by:
Mahatma Gandhi Education Society's
Centre For Humanities and Cultural Studies,
A- 102, Sanghavi Regency, Sahyadrinagar, Kalyan (W).
Email: chcskalyan@gmail.com
Mob. +91 9730721393 +91 8329000732